शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मीडिया और साहित्यिक पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका

कादम्बिनी मिश्र
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध संक्षेप

नवजागरण की चेतना के फलस्वरूप 19वीं सदी में साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए।इसके पश्चात हिन्दी साहित्य की अनेक धाराएँ फूटती हैं। आलोचना, निबंध, नाटक एवं पत्रकारिता आदि कई महत्वपूर्ण विधाओं का जन्म इस युग में होता है। इस युग की महत्वपूर्ण विशेषता यह रहीं हैकि इसने ईश्वर केन्द्रित चिंतन के स्थान पर मनुष्य केन्द्रित चिंतन पर बल दिया। जिसका आधार तर्क एवं बौद्धिकता थी। यही तर्क एवं बौद्धिकता इस युग में प्रगतिशील चेतना की वाहक बनी, क्योंकि यही वह समय था जब देश गुलाम था। दो परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ आपस में टकरा रही थी। ऐसे समय में भारतेन्दु जी एवं उनके मंडल के विभिन्न सदस्यों ने साहित्यिक रचनाओं को प्रगतिशील चेतना एवं यथार्थवादी चेतना से सम्पृक्त करते हुए सामाजिक सोद्देश्यता से जोड़ दिया। जिसमें पत्रिकाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी। प्रस्तुत शोध पत्र में मीडिया और साहित्यिक पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारतेंदु काल की पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य था हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य भारतेन्दु हरिशचंद्र ने 'कविवचन सुधा' और 'हरिशचंद्र मैंग्जीन' के प्रकाशन के साथ ही प्रारंभ कर दिया था। कलकत्ता से 'सारसुधानिधि' नामक एक साप्ताहिक पत्र निकल रहा था जिसमें भारतेन्दु काल की हिन्दी पत्रकारिता के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया इसमें हिन्दी पत्रकारिता के पाँच महत्वपूर्ण लक्ष्य बताए गये -

1 भारतवासियों का भ्रम संशोधन, सत् संस्कार स्थापना एवं उसकी चित्त की स्थिरता एवं दृढ़ता का संपादन करना।

2 यथार्थ में हिन्दी का प्रचार करते हुए लेखकों की संख्या में वृद्धि करना।

3 देश देशांतर के सामाचार प्रकाशित कर देशवासियों के ज्ञान का विकास करना।

4 भारतीय समाज में हिन्दी के प्रचार के माध्यम से मनस्विता, तेजस्विता, ओजस्विता आदि का संचार करना।

5 भारतीय व्यापार को बढ़ावा देना।

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय का कथन है, "मेरा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबंध उपस्थित करूं जो उसके अनुभव बढ़ाऐ और सामाजिक प्रगति में सहायक हो। में अपनी शक्ति भर शासकों को उनकी प्रजा की परिस्थितियों का सही परिचय देना चाहता हूँ और प्रजा की उनकी शासकों द्वारा स्थापित विधि-व्यवस्था से परिचित कराना चाहता हूँ ताकि शासक जनता को अधिक से अधिक सुविधा देने

का अवसर पा सके और जनता उन उपायों से अवगत हो सके जिनके द्वारा शासकों से सुरक्षा पायी जा सके और अपनी मांगे पूरी करायी जा सके।"1

उनके इस कथन से पत्रकारिता के उद्देश्य स्पष्ट रूप से सामने आते हैं। सामान्य तौर पर हम कह सकते हैं इस युग की पत्रकारिता का महत् उद्देश्य देशहित ही था। देशहित के लिए ही इस युग का हिन्दी साहित्य पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जगाने में लगा था। भारतेन्दु के बाद के साहित्यकारों एवं पत्रकारों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने भारत के बौद्धिक वर्ग को एक परिष्कृत भाषा-हिन्दी भाषा दी। जिसके माध्यम से भारत के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार हो सके। इसी के परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को गति मिली। इस कार्य में बालकृष्णभट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, महावीर प्रसाद, द्विवेदी आदि साहित्यकारों - पत्रकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस युग की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि कई साहित्यकार पत्रकार थे और पत्रकार साहित्यकार थे। जार्ज बर्नाड शॉ ने लिखा है, "कुशल पत्रकार साहित्यकार से भिन्न नहीं है अगर साहित्यकार का काम संसार को ठीक-ठीक देखना और परखना है तो पत्रकारिता का भी पहला काम यही है। पत्रकार के लिए यथार्थ वही है जो सम्भव हो चुका, साहित्यकार के लिए वह सम्भव हो सकता है, दोनों घटनाओं की गहराई में जाकर मानवता की सेवा करते है।"2

इस रूप में पत्रकारिता और साहित्य का सामाजिक सरोकार ज्यादा अलग नहीं है। पत्रकारिकता का साहित्यिक महत्व नहीं मानने वालों के लिए आचार्य शिवपूजन सहाय ने लिखा है, "हिन्दी दैनिकों ने जहाँ देश को उदबुद्ध करने में अथक प्रयास किया है। वहाँ जनता में साहित्यिक चेतना जगाने का श्रेय भी पाया है।"3

पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप

वर्तमान समय में विज्ञान एवं तकनीक के आ जाने से पत्रकारिता का स्वरूप अत्यंत व्यापक हो गया है। अब प्रिंट मीड़िया से कहीं अधिक इलेक्ट्रानिक मीड़िया का चलन है। आज के संदर्भ में मीडिया का सामान्य अभिप्राय सामाचार पत्र-पत्रिकाओं टेलीविजन, इंटरनेट, रेड़ियो इत्यादि से लिया जाता है। ये आधुनिक मीड़िया के लोकप्रिय एवं प्रभावशाली साधन है। किसी भी सामाजिक परिवर्तन के लिए मीडिया और साहित्य की बराबर भूमिका होती है। कोई भी क्रांति अकस्मात नहीं घटती पहले विचार रूप में उसका जन्म होता है फिर यह विचार साहित्य के माध्यम से लोकचेतना का हिस्सा बनती है इस लोकचेतना का व्यापक विस्तार मीडिया के माध्यम से होता है। समाज में मीड़िया की भूमिका संवादवहन करने की होती है। वह समाज के विभिन्न वर्गों सत्ता और जनता, व्यक्तियों एवं संस्थाओं के बीच पुल का कार्य करता है। वह सभी सूचनाओं का तथ्यपरक विश्लेषण ही नहीं करता बल्कि समालोचना भी करता है, इस क्रम में सूचनाओं, तथ्यों एवं घटनाओं को जनता तक पहुँचाने में ईमानदारी, निरपेक्षता और नैतिकता से काम लेती है, इस रूप में मीडिया का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। इस वृहत्तर सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन के कारण ही मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना गया है। इस सम्बन्ध में डॉ. ब्रह्मस्वरूप शर्मा ने कहा है, "संचार माध्यमों की द्रुतगामिता तत्कालीनता और सद्यः प्रभावात्मकता से प्रभावित परिवेश में जीवन-वास्तविकता का उद्घाटन करता साहित्यकार भी मानव-मूल्यों को नए अर्थ दे रहा है।"4

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वर्तमान परिदृश्य में मीड़िया अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक गया है। उसने न केवल साहित्य को दरकिनार किया है बल्कि अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता से भी दूर हट गया है। कालजयी साहित्यकार प्रेमचंद ने साहित्य को राजनीति का पिछलग्गू बनने से मना किया था। परंतु आज पत्रकारिता, साहित्य और राजनीति सभी बाजार द्वारा नियंत्रित हो रहे हैं। समाचार पत्र अनावश्यक विज्ञापनों से भरे-पड़े होते हैं यह व्यक्तिपूजा में सिमटता हा रहा है छोटे-बड़े राजनेताओं के चित्र के अतिरिक्त शायद ही इसमें कोई काम की बातें होती हैं। इसी प्रकार टी.वी. चैनल्स अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए फूहड़ एवं स्तरहीन भाषा में अनावश्यक नोक-झोंक दिखलाते हैं। इन प्रसारणों का उद्देश्य केवल क्षणिक आवेग या सनसनी पैदा करना है। ये बहसें कभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचती। "पारम्परिक पत्रकारिता में समाचार या विचार लेखक के समक्ष निर्धारित आचार संहिता के प्रति सचेतनता और संनिष्ठता वांछित है, किन्तु नये मीडिया में वह ऐसे किसी विनिर्दिष्ट आचरण के लिए अनुबन्धित नहीं है।"5

भाषा और संस्कृति किसी भी राष्ट्र की अस्मिता की पहचान होती है। आज मीड़िया भाषायी अनुशासन और व्याकरण की सारी सीमाओं को तोड़ता हुआ मनोरंजन को एक मात्र उद्देश्य मान चुका है। यह सही है कि मनोरंजन के विविध आयामों को अपनाकर नगरीय जीवन की तन्हाई और एकाकीपन की अचूक दवा के रूप में विकसित हुई है। लेकिन यह अचूक दवा अब नशे का रूप लेती जा रही है जिसके कारण सामाजिक सम्बन्धों एवं रिश्तों की चिर-पुरातन सांस्कृतिक शुचिता के प्रति पूरा समाज भ्रमित महसूस करने लगा है। सोशल मीड़िया से जुड़े लोग जहाँ स्वयं के सामाजिक होने का दावा करते हैं वहीं ये वास्तविक समाज से सर्वाधिक कटे हुए प्राणी होते हैं। मीडिया की इस स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता पर अकंुश लगाने के लिए इसे पुनः अपने प्रारंभिक उद्देश्यों की ओर देखना होगा जो साहित्य और समाज दोनों से ही जुड़ा हुआ था। साहित्यकार डॉ..सुधाकर मिश्र का कथन है, आज मीड़िया ने भाषायी संस्कारों को पूरी तरह विकृत कर दिया है बाजार ने हमारी भीतर की रचनात्मकता को भी नकली एवं सतही बनाकर रख छोड़ा है। ऐसे में साहित्य एक रास्ता है जहां हम अपने मूल्यों को बनाए एवं बचाए रख सकते हैं।

निष्कर्ष

साहित्य रागात्मक और आह्लादकारी होता है और पत्रकारिता तथ्यात्मक और सूचनापरक। साहित्य का प्रभाव दीर्घगामी शाश्वत होता है जबकि संचार माध्यम का प्रभाव तत्काल और तुरंत होता है अतः यह साहित्य से कम गंभीर होता है। साहित्य से हम परिपक्वता की अपेक्षा रखते हैं जबकि संचार माध्यमों से जागरूकता की। दोनों की प्रकृति, प्रवृत्ति और क्रियान्वयन में भिन्नता होने के बावजूद उद्देश्य एक ही होता है मानव कल्याण। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता एवं संचार माध्यमों में विज्ञापन के जुड़ जाने से यह बाजार के शिकंजे में कसता चला जा रहा है, बाजार ने मीडिया और साहित्य दोनों को प्रभावित किया है। बीते युगों में मीड़िया और साहित्य साथ-साथ चलकर महत्वपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति में लगे थे। तो वर्तमान समय में बाजारवादी संस्कृति ने दोनों को समवेत रूप से लक्ष्यच्युत किया है। पहले जब संचार माध्यम इतने प्रबल नहीं थे तो जनजागृति का दायित्व साहित्य के कंधे पर था। लेकिन वर्तमान समय में अपनी

द्रुतगामी प्रकृति संचार माध्यम मानव समाज की सोच को गति, प्रचार एवं प्रसार देते हैं। जहाँ आज का ज्ञान कराने में संचार माध्यमों का महत्वपूर्ण योगदान है वहीं जीवनमूल्यों के परिष्कार में साहित्य की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, दोनों की सापेक्षता ही समाज को नयी दिशा दे सकती है। इतिहास में ऐसे अनगिनित उदाहरण है जब मीडिया की शक्ति एवं लोकमानस पर उसकी पकड़ को पहचानते हुए महान लोगों ने उसे लोकपरिवर्तन के अहिंसक, प्रभावशाली और भरोसेमंद हथियार कहा। इस संदर्भ में अकबर इलाहबादी की पंक्ति अत्यंत प्रासंगिक जान पड़ती है -

खीचों न कमान, न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो अखबार निकालो"6

संदर्भ ग्रंथ

1 पत्रकारिता के विविध आयाम, डॉ. संजीव भानावत, पृष्ठ 47

2 आधुनिक पत्रकारिता, डॉ.. अर्जुन तिवारी, पृष्ठ 44

3 हिन्दी पत्रकारिता, डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, संस्करण 2011 पृष्ठ 31

4 समकालीन भारतीय साहित्य, मई-जून 2017, वर्ष-27 अंक-131, नयी दिल्ली, पृष्ठ 143

5 वागर्थ, अंक - 203, जून-2012, पृष्ठ 81

6 आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृष्ठ 14